अ
www.apnimaati.com
35-36
अपनी माटी
(साहित्य और समाज का दस्तावेज़ीकरण)
ISSN 2322-0724 Apni Maati
जनवरी–जून 2021
संयुक्तांक
UGC CARE Listed E-Magazine
www.apnimaati.com

अपनी माटी

साहित्य और समाज का दस्तावेज़ीकरण / T GC CAQE Khrsdc / OEEQ QEUŒV ED / QEFEQEED INT QMAK (ŒRRM 2322-0724 AomhL ``sh) Aomhl

अनुक्रमणिका : 'अपनी माटी' का 35-36वाँ अंक(संयुक्तांक)

35-36, 35-36 CnudqO`f d, T GC C`qd Khrsdc Œrt d,

अपनी माटी (ISSN 2322-0724 Apni Maati) अंक-35-36, जनवरी-जून 2021, चित्रांकन : सुरेन्द्र सिंह चुण्डावत

UGC Care Listed Issue 'समकक्ष व्यक्ति समीक्षित जर्नल' (OEEQ QEUŒV ED/QEFEQEED INT QMAK)

अनुक्रमणिका : 'अपनी माटी'-का 35-36वाँ अंक(संयुक्तांक)

सम्पादकीय

› जनाब! किसान के लिए पूस की रात कभी खत्म नहीं होती / जितेन्द्र यादव

धरोहर

› क्या हम वास्तव में राष्ट्रवादी हैं? /-प्रेमचंद

बतकही

› दलित साहित्यकार प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन से डॉ. माणिक की बातचीत

वैचारिकी

› भारतीय किसान : मिथक बनाम यथार्थ / प्रो. गजेन्द्र पाठक
› प्रवासी भारतीयों का सामाजिक-सांस्कृतिक संघर्ष / घनश्याम कुशवाहा
› बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के चिंतन में धर्म / डॉ. भारती सागर
› कबीर के राम / डॉ. अभिषेक रौशन
› मानव-नियति के प्रश्न और ‘अरिंदम’ / डॉ. बीना जैन
› जयशंकर प्रसाद की कहानियों का सौन्दर्यबोध / भरत

संघर्ष के दस्तावेज

› ‘तिरस्कृत’ में दलित चेतना / डॉ. गंगा सहाय मीणा
› संत्रास, कुंठा, घुटन और महानगरों का अम्बेडकरवादी लेखन / डॉ. कर्मानंद आर्य
› दलितों के संघर्ष का जीवंत दस्तावेज 'सलाम' / डॉ. आलोक कुमार
› पेरियार ललई सिंह के नाटकों में ब्राह्मणवादी-व्यवस्था का खंडन / विजय कुमार
› ओमप्रकाश वाल्मीकि के कविता कर्म का आन्तरिक यथार्थ / अमृत लाल जीनगर और डॉ. विदुषी आमेटा
› दलित सौन्दर्यशास्त्र और मलखान सिंह की कवितायें / डॉ. रविता कुमारी
› हिन्दी दलित कविता आलोचना : दशा और दिशा / सन्दीप कुमार
› ओड़िया दलित उपन्यासों की छवि / ज़िनित सबा

हूल-जोहार

› बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी: स्त्री चेतना - डॉ. विजय कुमार रंजन
› आदिवासी कविताओं में चित्रित आदिवासी समाज और स्त्री अस्मिता / लालुराम

समानांतर दुनिया

› फ़िल्म 'शूद्र द राइजिंग' :-शूद्र उत्पीड़न की महागाथा / डॉ. अनिल कुमार
› हिंदी-मलयालम साहित्य और सिनेमा में क्वीर विमर्श : एक झांकी / डॉ. निम्मी ए.ए

विरासत

› बौद्ध ग्रंथ ‘धम्मपद’ में तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का स्वरूप / कृष्ण कुमार साह
› कबीर की प्रासंगिकता : वर्तमान संदर्भ / डॉ. उमा देवी
› साहित्य,-समाज एवं संस्कृति का अंत :संबंध - डॉ. अर्चना त्रिपाठी
› दक्षिण-पूर्व एशिया मे प्राचीन भारत के सांस्कृतिक साम्राज्य का समीक्षात्मक अध्ययन / डॉ. प्रशान्त कुमार और गौरव सिंह
› न्यू मीडिया कला में पर्यावरण कला एवं पर्यावरणवाद / मुकेश कुमार शर्मा
› उर्दू का भाषा के रूप में विकास / विक्रम सिंह बारेठ

पाठक संख्या

3,325,249

लोक का आलोक

› पाबूजी का लोकदेवत्व / डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी
› 'गवरी' में ऐतिहासिक खेल 'राणा पूंजा भील' : कलात्मक दृश्य बिम्ब / डॉ. संदीप कुमार मेघवाल
› हिन्दी कहावतों में लोक-जीवन / डॉ. ज्योति यादव

हिंदी की बिंदी

› भारतीय नवजागरण के आईने में हिन्दी और अनुवाद / धीरज कुमार
› वेब मीडिया एवं भाषा अध्यापन / डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले
› कामताप्रसाद गुरु और किशोरीदास वाजपेयी एक तुलनात्मक विवेचन / चतरा राम
› छायावादी कविताओं के बहाने 'लंबी कविताओं' के शिल्प पर बहस / राजेश कुमार यादव

अनकहे-किस्से

› देह का उत्सव मनाती प्रियंवद की कथा-नायिकाएं / विष्णु कुमार शर्मा
› तमस उपन्यास की भाषिक संवेदना / प्रदीप कुमार प्रजापति
› एस. एल. भैरप्पा के उपन्यासों के वर्ण्य विषय / प्रो. राजिन्द्र पाल सिंह 'जोश' और केवल कुमार
› मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में विषय-वैविध्य / वंदना पाण्डेय
› 'शिखर और सीमाएं' उपन्यास में चित्रित पूर्वोत्तर, प्रेम और पितृसत्ता / चिन्मयी दास
› नई आर्थिक नीतियों से 'डूबते' गाँव का हलफ़नामा / नुसरत ज़बीन सिद्दीकी
› प्रतिरोध और प्रतिशोध का स्वर / तुल्या कुमारी
› सुरमई हरीतिमा / डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव

देशांतर

›
'जैसे उनके दिन फिरे' में अभिव्यक्त समकालीन जीवन की विसंगतियाँ / डॉ. महावीर सिंह वत्स और डॉ. राजबीर वत्स
› समकालीन यात्रावृत्तांतों के विश्लेषण का सामाजिक-सांस्कृतिक आधार / सुनील कुमार यादव
› संस्मरण साहित्य का वैशिष्ट्य : महादेवी वर्मा कृत 'स्मृति की रेखाएं' के परिप्रेक्ष्य में / कंचन लता यादव
› हिंदी साहित्य में थर्ड जेंडर विमर्श(विशेष संदर्भ : मैं पायल(उपन्यास) / हर्षिता द्विवेदी
› 'फिरोजी आँधियाँ'-के मार्फ़त व्यवस्था-बोध के प्रश्न / डॉ. भावना मासीवाल
› दर्द,-उपेक्षा तथा घृणा से भरे जीवन की कथा है 'किन्नर कथा'-/-भारती

कवितायन

› आधुनिक हिन्दी काव्य में अस्तित्ववादी चेतना की अभिव्यक्ति / डॉ. मार्तण्ड कुमार द्विवेदी
› मुक्तिबोधीय फैंटेसी, स्वप्न-कार्य की तकनीक तथा मुक्तिबोध के व्यग्रता स्वप्न / अनूप बाली
› 'राही नहीं राहों के अन्वेषी' : अज्ञेय का चिंतन और सृजन सरोकार / हेमन्त कुमार गुप्ता
› केदारनाथ अग्रवाल की कविता के कुछ पहलू / राज कुमार
› नीलेश रघुवंशी की कविता का जनतंत्र / कार्तिक राय
› समकालीन हिंदी ग़ज़ल में वंचित समाज / दीपक कुमार

नीति-अनीति

› छात्र असन्तोष : नैतिक शिक्षा की आवश्यकता / डॉ. दयाशंकर सिंह यादव
› एनसीएफ- 2005 पर आधारित माध्यमिक स्तर के हिन्दी पाठ्यक्रम में मध्यकालीन बोध / अनुसुइया शर्मा और डॉ. प्रवीण दोसी
› बेरोजगार युवा का मनोजगत (अखिलेश के 'अन्वेषण' उपन्यास के संदर्भ में) / बर्नाली नाथ

बींद-खोतली

› भारत में प्रवासी महिला कामगारों पर कोविड-19 का प्रभाव / डॉ. राजेश्वर दिनकर रहांगडाले
› गांधीयन गणराज्य का अर्थतंत्र / डॉ. कैलाश चन्द सामोता
› भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भूमिका : एक आलोचनात्मक विश्लेषण / पूजा जैन

रंगमंच

› भारतीय रंगमंच में वैकल्पिक रंग दृष्टि के रूप में हबीब तनवीर का रंग मुहावरा / सुनील कुमार
› मुद्राराक्षस के नौटंकी नाटकों की रंगमंचीय प्रयोगशीलता / रूपांजलि कामिल्या

पत्रकारिता के पहाड़े

› फेक न्यूज़ के प्रसारण को रोकने के प्रयासों का अध्ययन / डॉ. उमेश कुमार
› पत्रकारिता के इस क्षरण काल में प्रेमचंद की याद / अम्बरीश त्रिपाठी

S`fr # 35-36 # 35-36 CnudqO`fd # TGC C`qd Khrsdc Grt d

Rg`qd Sghr

http://www.apnimaati.com/2021/07/35-36.html

About अपनी माटी संस्थापक

हमारा लोगो

पाठक संख्या

3,325,249

अपनी माटी

साहित्य और समाज का दस्तावेज़ीकरण / T GC CAQE Khrsdc / OEEQ QEUĠEV ED / QEFEQEED INT QMAK (ĠRRM 2322-0724 AomhL ``sh) Aomh ``shbnl @f l `hkbnl

शोध : मानव-नियति के प्रश्न और 'परिंदे' / डॉ. बीना जैन

मानव-नियति के प्रश्न और ãपरिंदेÅ/-डॉ. बीना जैन

शोध-सार :

निर्मल वर्मा का साहित्य आधुनिक समाज में मनुष्य के जीवन से जुड़े मूलभूत प्रश्नों, उसकी स्थिति और नियति पर सांस्कृतिक विमर्श के रूप में उपस्थित होता है। 'परिंदे' प्रतीक के माध्यम से वे आधुनिक समाज की विडंबना को रूपायित करते हैं जिसमें मृत्यु का आतंक, हताशा, अवसाद, अकेलापन, अधूरापन, व्यर्थता-बोध मनुष्य की नियति बन गई है। कहानी के सभी चरित्र अपनी नियति में इन स्थितियों को झेलते हैं। वस्तुतः यह कहानी मृत्यु और जीवन के प्रश्नों को उपस्थित करती है। अकेलेपन और व्यर्थता-बोध के साथ जीने की विवशता की अनुभूति को सघन और व्यापक बनाती है।

बीज-शब्द : मृत्यु, अकेलापन, अधूरापन, प्रेम, नियति, स्मृति, आधुनिक सभ्यता।

मूल-आलेख :

'परिंदे' कहानी से अपनी अनुगूँज हिन्दी साहित्य में उत्पन्न करने व अपनी पहचान अलग से रेखांकित करने वाले निर्मल वर्मा सफल कहानीकार हैं। नामवर सिंह ने निर्मल वर्मा की 'परिंदे' कहानी से नई कहानी की शुरुआत मानी है। "अभी तक जो कहानी सिर्फ कथा कहती थी या कोई चरित्र पेश करती थी अथवा एक विचार का झटका देती थी वही निर्मल के हाथों जीवन के प्रति एक नया भावबोध जगाती है। साथ ही ऐसे दुर्लभ अनुभूति-चित्र प्रदान करती है जिन्हें हम कम से कम हिंदी में कहानी के माध्यम से प्राप्त करने के अभ्यस्त नहीं थे... फ़कत सात कहानियों का संग्रह 'परिंदे' निर्मल वर्मा की ही पहली कृति नहीं है बल्कि जिसे हम 'नई कहानी' कहना चाहते हैं उसकी भी पहली कृति है।'[1] निर्मल की कहानियां क्योंकि कहानी का एक नई दिशा में मोड़ हैं इसलिए नंदकिशोर आचार्य भी अपनी सहमति नामवर सिंह के साथ दर्ज करते हुए निर्मल वर्मा की कहानियों को 'कहानी में एक नई परंपरा का आरंभ बिंदु' कहते हैं।"[2]

निर्मल की कहानियां अपने तेवर में पूर्ववर्ती कहानी की किसी भी परंपरा का अनुसरण नहीं करतीं। व्यक्ति मन के जिस ठहराव और रीतेपन को निर्मल की कहानियां अभिव्यक्त करती हैं, वे जैनेंद्र और अज्ञेय की कहानियों से भिन्न अपनी जगह बनाती हैं। निर्मल वर्मा ने केवल कहानियां और उपन्यास नहीं लिखे बल्कि निबंध, यात्रा- संस्मरण, डायरी आदि गद्य की अन्य विधाओं में भी अपनी गहरी पैठ बनाई है। वे चाहे कुछ भी लिखें, उनका चिंतक और सर्जक साथ-साथ चलता है। उनकी कहानियों और उपन्यास में उनके चिंतन के विविध सूत्र विन्यस्त हैं। कहानियां लिखते समय उनका कहना है, "मैं कहानियां लिखता हूं, किंतु निबंध लिखने का शौक स्कूल से ही रहा है। मैंने अपने अधिकांश निबंध कहानियों के हाशिए पर नहीं उनके बीचो-बीच लिखे हैं। एक ही तर्क को दो तरफ से देखने की कोशिश की है।[3] अपनी डायरी में उन्होंने स्वीकार किया है कि उनके लिए कहानी लिखना और चिंतन करना दो अलग-अलग कर्म नहीं हैं। अक्सर-हां दोनों अपनी चौहद्दी तोड़कर एक दूसरे की सीमा में घुसपैठ करने की कोशिश करते हैं। चिंतन वस्तुतः दर्शन का मुख्य अंग है और दर्शन मनुष्य और सृष्टि को केंद्र में रखकर बात करता है। निर्मल के चिंतन या चिंता का स्रोत भी मनुष्य है। वे आधुनिक युग में मनुष्य की स्थिति और मानव नियति के प्रश्नों को उठाते हैं। उनके लेखों और कहानियों में सभ्यता की अंधाधुंध प्रगति का परिणाम और उससे जुड़ा अभिशप्त जीवन व्यक्त होता रहा है। बीसवीं शताब्दी और आधुनिक समाज में उत्पन्न होने वाले संकटों का हल ढूंढने का प्रक्रम ही उनके तमाम रचनात्मक साहित्य की भाव-भूमि निर्मित करता है।

निर्मल वर्मा के अनुसार हर लेखक अपने वर्तमान के संकट और मनुष्य की स्थिति को अपनी चिंताओं से जोड़कर एक पूरा संसार रचता है। निर्मल वर्मा के अनुसार रचना वह आईना है जिसमें दुनिया का यथार्थ नहीं (आत्म) सेल्फ की दुनिया प्रतिबिंबित होती है - मैं कौन हूँ, तुम कौन हो, वह कौन है, खोए हुए समय की भूल-भुलैया में अपने को ढूंढना है। नामवर सिंह उनकी कहानियों के आंतरिक सत्य को उद्घाटित करते हुए कहते हैं, "परिंदे से यह शिकायत दूर हो जाती है कि हिंदी कथा साहित्य अभी पुराने सामाजिक संघर्ष के स्थूल धरातल पर ही 'मार्क टाइम' कर रहा है। समकालीनों में निर्मल पहले कहानीकार हैं जिन्होंने इस दायरे को तोड़ा है- बल्कि छोड़ा है; और आज के मनुष्य की गहन आंतरिक समस्या को उठाया है।"[4] डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार "निर्मल वर्मा मन की गहरी परतों को उघाड़ने वाले कहानीकार हैं।"[5]

साहित्य उनके लिये अकेलेपन के क्षणों में अपने से साक्षात्कार है जहां सभी व्यवस्थाओं से मुक्त होकर सिर्फ अपने बारे में सोच सकें। वे समाज के ठोस यथार्थ और वास्तविकताओं के चित्रण की अपेक्षा आधुनिक संदर्भों में निरंतर अकेले होते जा रहे व्यक्ति के अंतर्मन की समस्याओं को विषय बनाते हैं। "अंतर्मन - जो अकेला है। अकेलापन-जो दुःख, पीड़ा, आंसुओं से बाहर है - जो महज़ जीने के नंगे बनैले आतंक से जुड़ा है ...जिसे कोई दूसरा व्यक्ति निचोड़कर बहा नहीं सकता।"[6] निर्मल वर्मा सिमोन वेल के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहते हैं, "मनुष्य की आत्मा की जरूरतों में अतीत की जरूरत सबसे अधिक शक्तिशाली है।"[7] उनके अनुसार हर शब्द किसी